https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

रयूमैटिक बुखार एवं स्ट्रेप्टोकोकल रिएक्टिव गठिया

के संस्करण 2016

रूमेटिक बुखार क्या है?

यह क्या है?

रयूमैटिक बुखार गले के स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया से संक्रमण के कारण शुरु होता है। स्ट्रेप्टोकोकस बेक्टीरिया की अनेक प्रजातियों में से केवल ग्रुप ए ही इस बीमारी का कारक है। गले में स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण स्कूल पढ़ने वाले बच्चो में आम बात है किन्तु यह जरूरी नहीं की हर बच्चे को रयूमेटिक बुखार की बीमारी हो। इस बीमारी में हृदय में सुजन से वह स्थायी रुप से क्षतिग्रस्त हो सकता है। सर्वप्रथम बच्चे को जोडो में आंशिक दर्द एवं सूजन महसूस होती है, तत्पश्चात कार्डआईटिस(हृदय में सूजन) एवं मस्तिष्की सूजन से असामान्य अनैच्छिक गती विकार(कोरिया) जैसी समस्या हो सकती है। इसके अतिरिक्त त्वचा पर चकत्ते व गांठे पड़ सकती है।

यह कितनी प्रचलित है?

पिछले वर्षो में ऐंटीबायोटिक दवाईयों के अभाव में गर्म प्रदेशो में यह बीमारी अधिक प्रचलित पाई जाती थी। ऐंटीबायोटिक उपलब्ध होने से फैरनिजाइटिस के उपचार के पश्चात इस बीमारी की संख्या में कमतरता देखी गई, परन्तु इस समय भी दुनिया भर के 5 से 15 वर्ष आयु के बच्चो मे यह बीमारी अभी भी पाई जाती है एवं उनमे से कुछ बच्चों को हृदय विकार का कारण बनती है। जोडो पर प्रभाव के हेतु इस बीमारी को बच्चों के गठिया रोग में सम्मिलीत किया गया है। रयूमेटिक बुखार कि समस्या विभिन्न देशों के अन्तर्गत असमान मात्रा में पाई जाती है।

कई देशों में इस बीमारी का एक भी मरीज नही पाया गया और अन्य कई देशों में इसकी मात्रा मध्यम से अधिक प्रतिशत देखी गई है(प्रति वर्ष 1,00,000 व्यक्तियों के प्रति 40 से अधिक व्यक्ति)। दुनिया भर में रयुमेटिक हृदय विकार के 15 मीलीयन मरीज अनुमानित है जिसमें से प्रति वर्ष 2,82,000 नये है और 2,33,000 मृत है।

इस बीमारी के क्या कारण है?

गले के ग्रुप ए स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण के प्रति असामान्य प्रतिक्षिण प्रणाली के कारण यह बीमारी निर्मित होती है। गले में संक्रमण के पश्चात और रयूमेटिक बुखार के लक्षण निर्मित होने से पहले व्यक्ति कई दिनों तक सामान्य रह सकता है।
गलें के संक्रमण के उपचार हेतु, प्रतिक्षिप्रणाली की उत्तेजना को कम करने एवं नये संक्रमण को रोकने में एंटीबायोटिक दवाईयों की जरूरत पडती है। हर नये संक्रमण से इस बीमारी का नया चक्र शुरू हो सकता है। इस प्रकार के नये चक्र की जोखिम रयूमेटिक बुखार के पश्चात पहले 3 वर्ष मे सर्वाअधिक होती है।

क्या यह आनुवंशिक बीमारी है

नही, यह आनुवंशिक बीमारी नही है क्योंकि यह माता-पिता से सीधे बच्चों में नही होती किन्तु एक ही परिवार के अनेक सदस्य इस बीमारी से ग्रसीत हो सकते है। इसका कारण स्ट्रेप्टोकोकल इनफैकंशन के प्रति लिडने की क्षमता का अनुवांशिक होना है।
स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण थुक एवं श्वसन स्त्राव द्वारा फेलता है।

मेरे ही बच्चे को बीमारी क्यों हुई? क्या इसकी रोकथाम की जा सकती है?

पर्यावरण व स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया इस बीमारी के प्रमुख कारण हैं लेकिन व्यावहारिक तौर पर यह बताना मुश्किल हो जाता है कि किसिको यह बीमारी होगी। बीमारी एक असामान्य प्रतिक्रिया है जिसमें प्रतिरक्षण प्रणाली स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया के साथ-साथ मनुष्य की कोशिकाओं (विशेषतः जोडो एवं हृदय की) पर भी प्रहार करती है। सट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया के कुछ खास प्रकार अतिसंवेदनशील व्यक्ति में रयूमैटिक बुखार को निर्मित करते है। भीड, संक्रमण के फैलाव का मुख्य पर्यावरण कारण है। रयूमैटिक बुखार से बचाव के लिये सट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया द्वारा गले के संक्रमण को जल्दी पहचान कर पेनिसीलीन जैसे एंटिबायोटिक इलाज से करना चाहिये।

क्या यह छुआ-छुत की बीमारी है?

र्यूमैटिक बुखार छुआ-छुत की बीमारी नहीं है परन्तु स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण एक व्यक्ति से दुसरे व्यक्ति तक आसानी से फैल सकता है। यह फैलाव भीड-भाड वाले वातावरण जैसे घर, स्कूल व सेना के कैम्प इत्यादि में ज्यादा होता है। इस फैलाव को रोकने में कुछ सावधानियाँ जैसे हाथ धोना एवं संक्रमित व्यक्ति से दुर रहना आवश्यक होती है।

बीमारी के मुख्य लक्षण क्या है?

रयूमैटिक बुखार में विभिन्न लक्षण हर मीरीज में अलग होते है। यह बीमारी स्ट्रेप्टोकोकल बैक्टीरिया से गले में संक्रमण का इलाज न करने व अधूरा इलाज करने के कुछ दिन बाद होती है।
गले में संक्रमण के दौरान बुखार, गले व टांसिल में लाली और गर्दन में लिम्फिनोड बडे व

दर्दनाक हो सकते है किन्तु यह लक्षण बच्चों व किषोरों में कभी-कभी बहुत हल्के या नहीं भी हो सकते है। शुरूआती संक्रमण के पश्चात बच्चा 2 से 3 हफ्ते सामान्य रहता है। तत्पश्चात बच्चा बुखार व निम्नलिखित लक्षणों के साथ चिकित्सक के पास आ सकता है।

गठिया

इस रोग में गठिया कई जोड़ो को कुछ समय के लिये प्रभावित करता है (घुटने, कोहनी, एड़ी व कंधे)। प्रदाह एक जोड़ से दूसरे जोड़ की तरफ जाता रहता है किन्तु गरदन व हाथ के जोड़ कभी-कभार ही प्रभावित होते है। जोड़ो का दर्द असहनीय हो सकता है किन्तु सूजन कम होती है। यह जानना जरुरी है कि दर्द ऐस्प्रिन या दर्द निवारक दवाओं से बहुत जल्दी ठीक हो जाता है।

कार्डाइटिज

मतलब है दिल में प्रदाह या सूजन। यह सबसे गंभीर लक्षण है। दिल की हृदयगति का आराम करते समय या सोते समय ज्यादा होना इसके लक्षण हैं। हृदय की धड़कन सुनकर हृदय पर प्रभाव का असर देखा जा सकता है। यह खराबी धीमें से तेज ध्वनि वाले मरमर के रुप में होती है तथा वाल्व की सूजन को दर्षित करती है जिसे एन्डोकार्डिटिस भी कहा जाता है। यदि हृदय की झिल्ली में सूजन आ जाये और पानी भर जाये तो उसे 'पेरीकार्डिटिस' कहा जाता है। यह पानी धीरे-धीरे सूख जाता है और अधिकतर कोई लक्षण पैदा नहीं करता है। गंभीर स्थिति में हृदय की कार्यशक्ति कमजोर हो सकती है जिसे इन लक्षणों से पहचाना जा सकता है जैसे खांसी, छाती में दर्द, हृदयगति तेज होना और सॉस जल्दी-जल्दी आना। ऐसी स्थिति में जॉच व हृदय रोग विषेषज्ञ से सम्पर्क करना चाहिये। पहला रयुमैटिक बुखार भी हृदय के वाल्व क्षतिग्रिस्त कर सकता है लेकिन अधिकतर यह समस्या लगातार रयुमैटिक बुखार के होने से होती है जिससे बढ़ती उम्र के साथ वाल्व खराब होने की संभावना बनती है। इससे बचाव करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

कोरिया

कोरिया एक यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है नृत्य। इसमें दिमाग में अंगो(ग्रीक) की क्रियाओं का नियंत्रण करने वाली जगह पर सूजन आ जाती है। रयुमैटिक बुखार के 10 से 30 प्रतिशित मरीजों में यह लक्षण देखा जाता है। गठिया एवं रयुमैटिक हृदय विकार से विपरीत, बीमारी के बढ़ने पर ही कोरिया के लक्षण सामने आते है। 1 से 6 माह के बीच में गले में संक्रमण के बाद यह लक्षण प्रकट होता है। गंदी लिखावट, कपड़े पहनने में दिक्कित, चलने, खाने में दिक्कत प्रारम्भिक लक्षण है। लक्षण का प्रभाव कम ज्यादा होता रहता है। साने के समय कम हो जाता है। लंबी थकावट होने पर लक्षण बढ़ जाता है। छात्रों में यह बीमारी पढ़ाई पर प्रभाव डालती है। एकाग्रता में कमी व उलझन होती है। सोम्य स्वरूप में यह लक्षण आसानी से नजरअंदाज हो सकते है। यह लक्षण आत्म सीमीत होता है लेकिन इसे सहायक ईलाज एवं समयानुरूप जांच कि अवश्यकता होती है।

त्वचा के चकत्ते

रयूमैटिक बुखार के लक्षण में त्वचा पर चकत्ते, धब्बा, गांठ हो सकती है। यह चकत्ते लाल

रंग के गोलकार में होते है और दर्द हीन गाठ जोडो़ के आसपास पाई जार्ती है। त्वचा के लक्षण 5 प्रतषित से भी कम लोगों में पाया जाता है। त्वचा के लक्षण हृदय के प्रदाह के साथ ही पाये जाते है। बुखार, थकान, काम में कमी, भूख में कमी, खून की कमी, पेट में दर्द, नाक से रक्तस्त्राव जैसे अन्य लक्षण पालकों को पारम्भकि लक्षणों में नजर आ सकते है।

क्या बीमारी सभी बच्चों में एक समान होती है?

हृदय की असामान्य धडकन सुनाई देना, गठयिा व बुखार वाले बच्चों में सामान्य लक्षण है। छोटी उम्र के बच्चों मे कार्डीटाइटसि होती है लेकनि जोडो़ में दर्द कमं होता है। कुछ मरीजों में कोरयिा या तो अकेले या कार्डीटाइटसि के साथ होता है और इसकी समयानुरूप हृदयरोग वशिषज्ञ द्वारा जांच करना आवश्यक है।

क्या बच्चों की बीमारी बडो से अलग है?

रयूमैटकि बुखार स्कूल के बच्चों या 25 साल से कम उम्र के लोगों की बीमारी है। 3 साल से कम उम्र के बच्चों में बहुत कम पाई जाती है। देखा गया है कि 80 प्रतषित मरीज 5 से 19 साल के बीच होते है। यदि बचाव के लयि पूरी दवा न ली गयी हो तो यह बीमारी वयस्कों में भी हो सकती है।